IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"सुभाष चन्द्र बोस का राष्ट्रीय एकता पर चिंतनएक : विकसित भारत की दिशा में योगदान"

डॉ हरीश कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास
रा0स्व0 ग्राम0उ0परा0 महाविद्यालय
कानपुर देहात

"सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता एवं संघर्षशील योद्धा थे, जिनका योगदान भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उनका दृष्टिकोण और विचार आज भी भारत की राजनीति और समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सुभाष चंद्र बोस ने हमेशा यह मान्यता रखी कि केवल अहिंसा के मार्ग से स्वतंत्रता प्राप्त करना कठिन है, और इसीलिए उन्होंने सशस्त्र संघर्ष की आवश्यकता को महसूस किया। उनका आदर्श और नेतृत्व भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

सुभाष चंद्र बोस का दृष्टिकोण केवल स्वतंत्रता प्राप्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने स्वतंत्रता के बाद एक ऐसे भारत की कल्पना की थी जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त हो। उनका विश्वास था कि भारत को एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए हमें अपने ऐतिहासिक धरोहर, संस्कृति और शक्ति को पुनः जागृत करना होगा।

इस शोधपत्र में सुभाष चंद्र बोस के दृष्टिकोण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा कि उन्होंने भारत को किस तरह से विकसित और समृद्ध बनाने का सपना देखा था और किस प्रकार उनके विचार वर्तमान में भारत की सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों से निपटने में सहायक हो सकते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य बोस के विचारों के आधार पर भारत के विकास के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करना और यह समझना है कि उनके दृष्टिकोण को आधुनिक संदर्भ में कैसे लागू किया जा सकता है।इस शोधपत्र के माध्यम से हम सुभाष चंद्र बोस के विचारों, उनके राष्ट्रीय दृष्टिकोण और उनके दृष्टिकोण के संदर्भ में विकसित भारत के निर्माण के लिए उनके योगदान को समझने का प्रयास करेंगे।"

नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता थे, जिनकी देशभक्ति और संघर्ष ने उन्हें भारतीय इतिहास के महान स्वतंत्रता सेनानियों में से एक बना दिया। उनका जीवन स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए अपार बलिदान और संघर्ष का प्रतीक है। उनका योगदान न केवल भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में था, बल्कि उन्होंने भारतीय सेना को ब्रिटिश भारतीय सेना से अलग एक स्वतंत्र इकाई के रूप में स्थापित करने का श्रेय भी प्राप्त किया। इस सैन्य इकाई ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम को महत्वपूर्ण दिशा देने में मदद की सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा के कटक में हुआ।[1] वे जानकीनाथ और प्रभावती बोस के पुत्र थे। प्रारंभिक जीवन में वे

स्वामी विवेकानंद और स्वामी रामकृष्ण परमहंस के विचारों से प्रभावित हुए। 1919 में कोलकाता विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में बी.ए. की डिग्री प्राप्त करने के बाद सुभाष चंद्र बोस ने इंग्लैंड जाने का निर्णय लिया और वहां कैंब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। 1920 में उन्होंने भारतीय सिविल सर्विस (आईसीएस) की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया, लेकिन देशप्रेम के कारण मात्र सात महीने बाद उन्होंने इस प्रतिष्ठित नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े।16 जुलाई 1921 को सुभाष चंद्र बोस इंग्लैंड से मुंबई पहुंचे और महात्मा गांधी से पहली बार मिले। इसके बाद वे कोलकाता गए और चितरंजन दास से मिले, जिन्हें उन्होंने अपना राजनीतिक गुरु माना।[2] इस दौरान भारत में असहयोग आंदोलन शुरू हो रहा था, जिसमें सुभाष चंद्र बोस ने सक्रिय भूमिका निभाई। 10 दिसंबर 1921 को उन्होंने 'प्रिंस ऑफ़ वेल्स' के भारत आगमन का विरोध किया, जिसके कारण उन्हें पहली बार जेल जाना पड़ा। कुल मिलाकर, सुभाष चंद्र बोस ने 11 बार जेल यात्रा की।1931 में सुभाष चंद्र बोस को कोलकाता नगर निगम का महापौर चुना गया और वे अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष बने।[3] 1938 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष बने। 1939 में त्रिपुरी (जबलपुर) में कांग्रेस के अधिवेशन में भी उन्हें अध्यक्ष चुना गया, लेकिन गांधी जी से मतभेदों के कारण उन्होंने त्यागपत्र दे दिया और 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की[4] सुभाष चंद्र बोस के राष्ट्रीय संघर्ष को अंग्रेज सरकार ने गंभीरता से लिया और उन्हें नजरबंद कर दिया। 17 जनवरी 1941 को सुभाष चंद्र बोस ने अंग्रेजों को चकमा देते हुए मौलवी के वेश में घर से निकलकर काबुल, मास्को होते हुए बर्लिन पहुंचे। यहां उन्होंने जर्मनी के चांसलर एडोल्फ हिटलर से मुलाकात की और जर्मन विदेश मंत्री बोन रिबन ट्रोय की मदद से 'स्वतंत्र भारत केंद्र' और 'आजाद हिंद रेडियो' की स्थापना की। इसके अलावा, उन्होंने जर्मनी और इटली के द्वारा बंदी बनाए गए भारतीय सैनिकों को एकत्र किया और आजाद हिंद फौज का गठन किया। इस फौज के सिपाही सुभाष चंद्र बोस को 'नेताजी' कहकर संबोधित करते थे। 16 मई 1943 को सुभाष चंद्र बोस गुप्त रूप से टोक्यो पहुंचे, जहां से वे सिंगापुर पहुंचे और रासबिहारी बोस के सहयोग से भारतीय स्वतंत्रता लीग और आजाद हिंद फौज का नेतृत्व किया। यहां उन्होंने 'दिल्ली चलो' का प्रसिद्ध नारा दिया। 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर में सुभाष चंद्र बोस ने स्वतंत्र भारत की अस्थाई सरकार का गठन किया।जनवरी 1944 में उन्होंने अपना मुख्यालय रंगून (बर्मा) स्थानांतरित किया। लेकिन 15 अगस्त 1945 को जापान की पराजय के साथ भारतीय स्वतंत्रता लीग को भी पीछे हटना पड़ा। 18 अगस्त 1945 को एक विमान दुर्घटना में सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु की विवादित खबर आई, जो आज भी रहस्यमयी बनी हुई है।

सुभाष चंद्र बोस व्यवस्थित सिद्धांतकार एवं दार्शनिक ना होकर एक यथार्थवादी एवं कर्म योगी थे, उन्होंने राष्ट्र निर्माण एवं स्वाधीनता के ध्येय को सामने रखकर समय-समय पर जो विचार अपनी कृतियों, लेखों, भाषणों एवं पत्र व्यवहार में व्यक्त किये उसमें उनके विकसित भारत की संकल्पना स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती है। सुभाष चंद्र बोस के विकसित भारत की अवधारणा को दो बिंदुओं के तहत विवेचित किया जा सकता है ,प्रथम सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में उत्थान से किस प्रकार भारत को विकसित जाए, f}rh; आर्थिक क्षेत्र में उत्थान से किस प्रकार विकसित भारत को की संकल्पना को साकार किया जा सकता है।[5] सुभाष चंद्र बोस ने सामाजिक एवं राजनीतिक उत्थान को एक दूसरे का पूरक मानते हुए 1929 में दिए गए भाषण में कहा था कि हमारे समाज में जहाँ सामाजिक तनाव है, आर्थिक असमानता है वहां लोगों को राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए प्रेरित नहीं किया जा सकता है। इसलिए सर्वप्रथम सामाजिक और आर्थिक तनाव को दूर करके सहिष्णुता लाने का प्रयास किया जाए साथ ही राष्ट्र को उन्नत एवं स्वाधीन बनाने के लिए स्वतंत्रता की अलख भी जगाए रखा जाए। सुभाष चंद्र बोस ने भारत को उन्नत राष्ट्र बनाने के लिए सर्वतोमुखी स्वतंत्रता पर बल दिया, यह एक ऐसी स्वतंत्रता है जो व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए उपयुक्त है, जो स्त्री-पुरुष, धनवान-निर्धन, व्यक्ति एवं वर्गों को समान रूप से प्राप्त होगी। सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय समाज में फैली असहिष्णुता एवं असमानता को ध्यान में रखते हुए संपदा के समतामूलक वितरण के साथ-साथ सामाजिक विषमताओं के अंत, जात-पांत के बंधनो का उन्मूलन धार्मिक असहिष्णुता अंत की बात की जिससे श्रेष्ठ समाज एवं राष्ट्र का निर्माण हो सके[6]।

भारत को एक श्रेष्ठ, लोकतांत्रिक और विकसित राष्ट्र बनाने के लिए सुभाष चंद्र बोस ने समाजवादी गणराज्य की स्थापना पर बल दिया, जो पांच आधार स्तंभो पर आधारित है – न्याय, समानता, स्वतंत्रता, अनुशासन, एवं प्रेम.

सुभाष चंद्र बोस ने इन आधार स्तंभों पर चर्चा करते हुए कहा न्याय सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार को इंगित करता है जिसके लिए समानता आवश्यक है। समानता समाज में किसी प्रकार के भेदभाव को अस्वीकार करता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि किसी तरह का भेदभाव मानव की स्वतंत्रता को नष्ट करके विषमता को बढ़ाता है। इस प्रकार स्वतंत्रता समानता की आवश्यक शर्त बन जाती है। सुभाष चंद्र बोस ने स्वतंत्रता को स्वच्छंदता से अलग करते हुए कहा की स्वच्छंदता कानून एवं अनुशासन के अभाव की स्थित है जो अन्य के परतंत्रता का कारण बन जाती है, सच्ची स्वतंत्रता वह है जिसमें कानून एवं अनुशासन का व्यापक महत्व होता है। अनुशासित जीवन ही व्यक्ति को सद्मार्ग पर ला सकता है कानून के अनुगमन को प्रेरित कर सकता है। सुभाष चंद्र बोस के अनुसार इन चारों तत्वों के अलावा जो पांचवा तत्व प्रेम का है वह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि मानव के प्रति मानव में प्रेम नहीं होगा तो चारो तत्व महत्वहीन हो जाएंगे।

सुभाष चंद्र बोस एक व्यावहारिक दूरदृष्टा थे उन्होंने अपने 1938 के कांग्रेस के अध्यक्षीय संबोधन में स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी की थी कि हवाई शक्ति के विकास के कारण ब्रिटिश शक्ति में गिरावट आएगी और ब्रिटिश साम्राज्य अपने अंतर्विरोधी के कारण टूट जाएगा। ऐसे में ब्रिटिश सरकार भारत के लोगों को सत्ता हस्तांतरण को बेअसर करने के लिए भारत छोड़ने से पहले भारत का विभाजन कर देंगे। इसी को दृष्टिगत रखते हुए सुभाष चंद्र बोस ने भारत को मजबूत एवं विकसित राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित करने हेतु कुछ मूलभूत सिद्धांतों की वकालत की जिसमें प्रमुख सरकार के गठन हेतु लोकतांत्रिक स्वरूप को अपनाना, मौलिक अधिकारों की व्यवस्था, गरीबी एवं जमीदारी उन्मूलन, भूमि सुधार एवं सहकारी समितियो का गठन, अल्पसंख्यकों की सुरक्षा एवं उसके सामाजिक तथा आर्थिक उन्नयन के लिए विशेष प्रावधान, भारत का एकीकरण करना आदि शामिल है। साथ ही सांस्कृतिक स्वतंत्रता का संरक्षण रेडियो-फिल्म आदि के माध्यम से देश में समरसता का विकास, जनसंख्या नियंत्रण हिंदी उर्दू के समिश्र से बनी एक समान भाषा का समर्थन सुभाष चंद्र बोस ने किया।

सुभाष चंद्र बोस राष्ट्रीय एकता के प्रबल समर्थक थे। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्रीय एकता के बिना कोई राष्ट्र सशक्त और विकसित नहीं बन सकता। सुभाष चंद्र बोस ने तर्क दिया कि राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय गौरव की स्थापना के लिए लोगों के मन में राष्ट्रीय आकांक्षा जागृत करना बहुत जरूरी है। राष्ट्रीय आकांक्षा ही आगे चलकर मानव समाज को उन्नत बनाने में महत्वपूर्ण योग देगा। सुभाष चंद्र बोस के अनुसार "स्वतंत्र हो जाने पर यदि हम एक राष्ट्र के रूप में संगठित होना चाहते हैं तो यथार्थ में कठोर परिश्रम करना होगा। राष्ट्रीय एकता और संगठन को विकसित करने के लिए अनेक बातों की आवश्यकता होगी यथा एक सामान्य भाषा, एक सामान्य वेशभूषा, एक सामान्य आहार आदि। मेरे विचार से एकता की समस्या व्यापक रूप से एक मनोवैज्ञानिक समस्या है, लोगों को यह अनुभव करने के लिए कि वे एक राष्ट्र के हैं, शिक्षित करना होगा और लोगों को अभ्यास कराना होगा।" सुभाष चंद्र बोस के अनुसार अपने देश में बनी हुई वस्तु की गुणवत्ता चाहे कुछ कम हो और उसकी

कीमत चाहे कुछ ज्यादा हो, तो भी उसे खरीदने से देशी उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। राष्ट्रहित की सिद्धि की दिशा में यह एक तरह से आत्म बलिदान होगा। सुभाष चंद्र बोस का यह भी मत था कि एक राष्ट्र मजबूत और विकसित तभी हो सकता है जब उसके पास पर्याप्त सैनिक शक्ति हो अर्थात सैन्य शक्ति के अभाव में कोई राष्ट्र मजबूत और उन्नतशील नहीं बन सकता ।

भारत को एक सशक्त एवं विकसित राष्ट्र बनाने के लिए सुभाष चंद्र बोस ने समावेशी आयोजन एवं औद्योगीकरण का समर्थन किया। जीवन के प्रारंभिक चरण में सुभाष चंद्र बोस ने औद्योगीकरण का विरोध किया और कहा कि औद्योगीकरण अर्थात मशीनीकरण मानव सभ्यता एवं जीवन में विष घोलने वाला है। लेकिन जैसे-जैसे सुभाष चंद्र बोस को व्यावहारिक जगत का अनुभव हुआ तथा वे परिपक्व होते गए मशीन की अगुवाई वाले औद्योगीकरण का समर्थन करने लगे। 21 अगस्त 1938 को इंडियन साइंस न्यूज एसोसिएशन की आम बैठक आयोजित की गई। जिसमें प्रसिद्ध वैज्ञानिक मेघनाथ साहा ने कांग्रेस अध्यक्ष सुभाष चंद्र बोस से सवाल किया कि "क्या मैं पूछ सकता हूं कि भविष्य का भारत ग्रामीण जीवन के दर्शन चरखा एवं बैलगाड़ी को पुनर्जीवित करने जा रहा है, जिससे आगे भी दसता बनी रहे या वह एक आधुनिक औद्योगिक राष्ट्र बनने जा रहा है जो अपने सभी प्राकृतिक संसाधनों को विकसित करके अपने लोगों को गरीबी, अज्ञानता से मुक्त करेगा एवं उनकी रक्षा, सुरक्षा करेगा इस प्रकार सभ्यता में एक नया दौर शुरू करेगा? सुभाष चंद्र बोस ने मेघनाथ साहा के प्रश्नों का प्रतिउत्तर 2 अक्टूबर 1938 में दिल्ली में आयोजित उद्योग मंत्रियों के सम्मेलन में दिया। सुभाष चंद्र बोस ने स्पष्ट रूप से कहा आधुनिक औद्योगिक प्रौद्योगिकी, भारत के प्रगति एवं विकास के लिए आवश्यक है। हमें भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए विज्ञान एवं तकनीक का सही तरह से उपयोग करना होगा। सुभाष चंद्र बोस द्वारा 1921 में अपने राजनीतिक गुरु चितरंजन दास को लिखे पत्रों से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने भारत को एक उन्नतशील राष्ट्र बनाने के लिए नियोजन के महत्व को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया तथा इसको कार्य रूप देने के लिए जैसे ही 1938 में कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए वैसे ही सक्रिय हो गए। मई 1938 में इसी प्रयोजन हेतु उन्होंने मुंबई में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक बुलाई तत्पश्चात उन्होंने जुलाई 1938 में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक पुनः बुलाई। व्यापक विचार-विमर्श के उपरान्त उन्होने नियोजन समित के गठन की योजना बनाई । अपनी योजना को व्यावहारिक धरातल पर उतारने के लिए 19 अक्टूबर 1938 को पंडित जवाहरलाल नेहरू को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने अनुरोध किया कि "मुझे आशा है कि आप योजना समिति की अध्यक्षता को स्वीकार करेंगे, यदि इसे सफल बनाना है तो आपको यह अवश्य करना चाहिए।" इस प्रकार सुभाष चंद्र बोस ने भारत को उन्नत राष्ट्र बनाने के लिए बहुत कम समय में नियोजन की पूरी रूपरेखा एवं एक पूरा ढांचा तैयार किया। कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में सुभाष चंद्र बोस ने अपने संबोधन में विकसित भारत की संकल्पना के संदर्भ में कहा था कि "यद्दिप पुनर्निर्माण की परिकल्पना की विस्तृत योजना देना समय से पहले की कवायद लग सकती है पर हम कुछ सिद्धांतों पर यहां विचार कर सकते हैं, जिसके अनुसार हमारे भविष्य का सामाजिक पुनर्निर्माण होना चाहिए। मेरे मन में इसके लिए कोई संदेह नहीं है कि गरीबी, निरक्षरता एवं बीमारी के उन्मूलन और वैज्ञानिक उत्पादन एवं वितरण से संबंधित हमारी प्रमुख राष्ट्रीय समस्याओं को समाजवादी तर्ज पर ही प्रभावी ढंग से निपटाया जा सकता है। हमारी भावी राष्ट्रीय सरकार को सबसे पहले यह काम करना होगा कि पुनर्निर्माण की व्यापक योजना तैयार

करने के लिए एक आयोग का गठन करना होगा। इस योजना के दो भाग होंगे एक तात्कालिक कार्यक्रम एवं दूसरा लंबी अवधि का कार्यक्रम- राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के संबंध में हमारी प्रमुख चिंता यह होगी कि अपने देश से गरीबी को कैसे मिटाया जाए? इसके लिए हमारी भूमि वितरण व्यवस्था में आमूल-चूल सुधार की आवश्यकता होगी जिसमें जमीदारी का उन्मूलन किया जाना भी शामिल है। कृषि ऋणग्रस्तता को समाप्त करना होगा एवं ग्रामीण आबादी के लिए सस्ते ऋणों का प्रावधान करना होगा। उत्पादक एवं उपभोक्ता दोनों के लाभ के लिए सहकारी आंदोलन का विस्तार करना होगा। भूमि से उपज बढ़ाने के लिए कृषि को वैज्ञानिक आधार देना होगा।

आर्थिक समस्या का हल करने के लिए कृषि सुधार ही पर्याप्त नहीं होगा। राज्य के स्वामित्व एवं राज्य के नियंत्रण में औद्योगिक विकास की एक व्यापक योजना अनिवार्य रूप से बनानी होगी एवं एक नई औद्योगिक प्रणाली का निर्माण करना होगा।योजना आयोग को सावधानीपूर्वक विचार करना होगा और तय करना होगा कि आधुनिक कारखानो से प्रति स्पर्धा के बावजूद कौन-कौन से घरेलू उद्योगों को पुनर्जीवित किया जा सकता है और किस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर उत्पादन को प्रोत्साहित किया जा सकता है।— भारत जैसे देश में कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित करने के लिए व्यापक रूप से प्रयास करना होगा विशेष रूप से कृषि से जुड़े हाथ से कटाई एवं हाथ से बुनाई सहित उद्योगों के मसले में। अंतिम बात जो कि महत्वपूर्ण है वह यह है कि योजना आयोग की सलाह पर राज्य को उत्पादन एवं विनियोग दोनों के क्षेत्र में हमारी पूरी कृषि एवं औद्योगिक प्रणाली को धीरे-धीरे सामाजिक बनाने के लिए एक व्यापक योजना को अपनाना होगा।" 17 दिसंबर 1938 को सुभाष चंद्र बोस ने अखिल भारतीय राष्ट्रीय योजना समिति के उद्घाटन भाषण में बोलते हुए कहा कि "राष्ट्रीय योजना समिति को सबसे पहले अपना ध्यान मूल उद्योगों पर केंद्रित करना होगा अर्थात वे उद्योग जो अन्य उद्योगों को सफलतापूर्वक चलते हैं जैसे बिजली उद्योग, धातु उद्योग, रसायन उद्योग, संचार उद्योग, रेलवे, टेलीग्राम, टेलीफोन, रेडियो उद्योग आदि।

सुभाष चंद्र बोस ने 1939 में एक नए संगठन (दल) 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। इस संगठन (दल) के दृष्टि पत्र में उन्होंने संगठन के जो उद्देश्य बताए, वे उनकी भारत दृष्टि को रेखांकित करतें हैं। इस दृष्टि पत्र के विचारों का सार निम्नवत है- 1- दल जनता के अर्थात किसानों एवं मजदूरों के हितों का समर्थन करेगा ना कि जमीदारों, पूंजीपतियों और साहूकारों के वर्ग निहित स्वार्थ का।2- दल भारतीय जनता की पूर्ण राजनीतिक तथा आर्थिक मुक्ति के लिए कार्य करेगा।3- दल अंतिम उद्देश्य के रूप में संघात्मक शासन का समर्थन करेगा किंतु आगामी कुछ वर्षों तक वह अधिनायक वादी शक्तियों से संपन्न एक मजबूत केंद्रीय सरकार में विश्वास करेगा जिससे कि भारत अपने पैरों पर खड़ा हो सके।4- देश के खेतिहर तथा औद्योगिक जीवन को पुनःसंगठित करने के लिए दल राजकीय नियोजन की सुदृढ़ तथा समुचित व्यवस्था में विश्वास करेगा।5- दल नई सामाजिक व्यवस्था का उन पुराने गाँव, समाजों के आधार पर निर्माण करने का प्रयत्न करेगा जिससे गाँव पंच शासन करते थे। इसके अतिरिक्त वह जाति जैसी वर्तमान सामाजिक दीवारों को ध्वस्त करने की चेष्टा करेगा। 6- दल आधुनिक संसार में प्रचलित सिद्धांतों तथा प्रयोग को ध्यान में रखते हुए एक नई मुद्रा व्यवस्था की स्थापना करने का प्रयास करेगा।7- दल जमींदारी प्रथा का उन्मूलन करने तथा संपूर्ण भारत में एक सी भूमि व्यवस्था कायम करने की कोशिश करेगा।8- दल उस

प्रकार के लोकतंत्र का समर्थन नहीं करेगा जैसा कि विक्टोरिया के शासनकाल के मध्य इंग्लैंड में प्रचलित था। वह एक ऐसे शक्तिशाली दल के शासन में विश्वास करेगा जो सैनिक अनुशासन के द्वारा परस्पर आबध्द होगा।9- भारत की स्वतंत्रता के पक्ष को मजबूत बनाने के लिए वह अपने आंदोलन को भारत के भीतर तक ही सीमित नहीं रखेगा बल्कि वह अंतर्राष्ट्रीय प्रचार का भी सहारा लेगा और उसके लिए विद्यमान अंतर्राष्ट्रीय संगठन का प्रयोग करने का प्रयत्न करेगा।10- दल सब उग्रवादी संगठनों को एक राष्ट्रीय कार्यपालिका के अंतर्गत संगठित करने का प्रयत्न करेगा जिससे जब कभी कोई कार्यवाही की जाए तो अनेक मोर्चो पर एक साथ कार्य किया जा सके।

कभी-कभी कुछ विश्लेषक सुभाष चंद्र बोस पर फासीवादी होने का आरोप लगाते हैं। इसके लिए वह मुख्य रूप से दो तर्कों का सहारा लेते हैं, पहला द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सुभाष चंद्र बोस ने फासिस्ट शक्तियों से हाथ मिलाया एवं दूसरा 1941 में उनके द्वारा काबुल में दिया गया वक्तव्य जिसमें उन्होंने कहा था कि "भारत में जितने मतभेद फैलें हैं उनको दूर करने के लिए यह जरूरी होगा कि ब्रिटिश शासन के अंत के बाद 20 वर्षों तक इस देश को किसी सुदृढ अधिनायक के शासन में रखा जाए। " लेकिन इन तर्कों के आधार पर उन्हें फासीवादी मानना उचित नहीं होगा। सुभाष चंद्र बोस ने द्वितीय विश्व युद्ध में भारत को स्वतंत्र कराने हेतु फासिस्ट शक्तियों से जरूर हाथ मिलाया था, लेकिन उनके पीछे उनकी मान्यता थी कि ब्रिटिश आधिपत्य ने भारत में शोषण का जो तांडव मचाया है, उसको भगाने के लिए साधनों की पवित्रता पर ध्यान देना आवश्यक नहीं है, इसलिए फासिस्ट शक्तियों से हाथ मिलाना अनैतिक नही है। इसी प्रकार भले ही सुभाष चंद्र बोस ने भारत में संक्रांति काल के लिए अधिनायक वादी तंत्र का समर्थन किया हो लेकिन इसके पीछे उनका मत था कि भारत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जटिलता के समाधान के लिए शासन का शक्तिशाली होना आवश्यक है जैसा तुर्की में दूरदर्शी अधिनायक कमाल पाशा ने किया था। यदि ऐसा नहीं किया गया तो भारत में लोकतंत्र के नष्ट होने का खतरा सदैव विद्यमान रहेगा। सुभाष चंद्र बोस ने फासिस्ट प्रजातिवाद एवं साम्राज्यवादी विस्तार का कभी समर्थन नहीं किया। उन्हें भारत के लोगों के स्वतंत्रता, समानता एवं भाईचारा में गहरी आस्था थी। उन्होंने भारतीय समाज के सभी वर्गों को भाषायी एवं सांस्कृतिक स्वतंत्रता प्रदान करने की हिमायत की। उन्होंने अपने संगठन फारवर्ड ब्लाक के लिए जो राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि पत्र घोषित किया उसमें फासिस्ट विचारधारा कहीं नहीं दिखाई पड़ती बल्कि वे सब लोकतांत्रिक, समाजवादी धाराओं का समर्थन करते हैं। इस प्रकार सुभाष चंद्र बोस ने भारत को एक सुदृढ, उत्कृष्ट एवं विकसित राष्ट्र बनाने के लिए तथा विश्व पटल पर भारत की महती भूमिका को स्थापित करने के लिए एक व्यावहारिक दृष्टि प्रदान की। सुभाष चंद्र बोस व्यावहारिक दूरदृष्टा होने के कारण एक सशक्त भारत के निर्माण का जीवन पर्यंत प्रयास करते रहे। जिसके कारण भारतीय चिंतन दृष्टि में उन्हें विशिष्ट स्थान प्राप्त होता है।

संदर्भ सूची

1--बोस, सुभाष चंद्र, (1965), 'इन इंडियन पिलग्रीम', एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुंबई i`"B-134

2-बोस, सुभाष चंद्र, (1923), 'भारत का संघर्ष (1920 से 1942)', प्रभात प्रकाशन लिमिटेड, नई दिल्ली i`"B 44

3-बोस, सुभाष चंद्र, (2016), 'तरुणाई के सपने' भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली i`"B 156

4-बोस, शिशिर कुमार, संपादक (1997), 'नेताजी संपूर्ण वांड्मय', प्रशासन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, i`"B -57

5-ह्यूग टोय, (1959), 'स्प्रिंगिंग टाइगर: ए स्टडी ऑफ़ रिवॉल्यूशनरी', लंदन, कैसल i`"B -244

6-शर्मा, राघव शरण एवं विश्वास, देवव्रत, संपादक (2018), सुभाष चंद्र बोस: पायनियर आफ इंडियन इकोनामिक एंड पॉलीटिकल प्लानिंग, अनामिका पब्लिकेशन, नई दिल्ली i`"B -165

7-बर्मा, वी0पी0 (1997), 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा i`"B -221

8-धर, अनुज (2014), 'नेताजी रहस्य गाथा', वितस्ता पब्लिशिंग लिमिटेड, नई दिल्ली i`"B -121

9-तंवर, श्याम सिंह एवं मृदुलता (2018), 'भारतीय स्वाधीनता के पितामहः सुभाष चंद्र बोस अपनों ने ही भुलाया', साक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली i`"B -232

10-चट्टोपाध्याय, गौतम (2010), 'सुभाष चंद्र बोस एवं भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन', पीपुल्स पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली i`"B -178,

11-'सिलेक्टेड स्पीचेज़ ऑफ़ सुभाष चंद्र बोस', पब्लिकेशन डिविजन, भारत सरकार i`"B -176 ,

12-घोष, चंद्रचूड (2022), 'बोस: द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ़ एन इनकन्वेनिएंट नेशनलिस्ट', पेंगुइन वाइकिंग पब्लिकेशन i`"B -163,

13-प्रोफेसर अनीता बी पॉफ (2013), 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस एण्ड जर्मनी', फेडरेशन ऑफ़ इंडो जर्मन सोसाइटीज।

14-सान्याल, संजीव (2023), 'क्रांतिकारी भारत के स्वतंत्रता संग्राम की एक अलग कहानी', हार्परकॉलिंस पब्लिशर्स, गुरुग्राम।